1.1 व्यक्तित्व :-

नई कहानी में जिन कथाकारों ने अपनी अलग पहचान बनाई हैं, मृदुला गर्ग उन्हीं में से एक है । पिछले कुछ वर्षों में एक कहानीकार तथा उपन्यासकार के नाते उनकी विशेष चर्चा हुई है ।

1.1.1 जन्म :-

मृदुला गर्ग का जन्म 25 अक्टूबर, 1938 को कलकत्ता में हुआ । इनकी जन्मतिथि के संबंध में एक बात यह रही है कि स्कूल में जन्मतिथि 25 अगस्त लिखवायी जाने के कारण सभी सरकारी कागजातों पर जन्मतिथि 25 अगस्त ही रही है, पर पुस्तकों के मलपृष्ठ पर 25 अक्टूबर लिखी जाती है ।

1.1.2 माता-पिता :-

मृदुला गर्ग की माँ का नाम रविकांता जैन । वे साहित्य में रूचि रखती थी । सिर्फ मैट्रिक पास होते हुए भी अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू तीनों भाषाओं का साहित्य पढ़ती थीं ।

पिता का नाम वीरेंद्रप्रसाद जैन । वे अर्थशास्त्र में एम्. ए. व एल. एल. बी. थे । इलाहाबाद विश्वविद्यालय में छात्र संघ के अध्यक्ष व स्वतंत्रता सेनानी थे । वे भी साहित्य में गहरी रूचि रखते थे, और अंग्रेजी, उर्दू, फारसी के विद्वान होने के अलावा हिंदी जानते थे ।

1.1.3 बचपन :-

मृदुला बचपन में कमजोर प्रकृति के कारण हमेशा बीमार रहती थी, इस कारण उनका स्वभाव अंतर्मुखी बन गया । इस स्वभाव के कारण उन्हें किताबें पढ़ने की आदतसी लग गई । कम उम्र में ही मृदुला ने अनेक बड़े-बड़े रूसी लेखकों की लोकप्रिय रचनाएँ पढ़ डालीं ।

1.1.4 शिक्षा :-

मृदुला ने '' मिसंडा हाऊस '' कॉलेज से बी.ए. ऑनर्स किया तथा विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र विषय में दूसरा नंबर प्राप्त किया । इस सफलता के कारण उन्हें 'दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनामिक्स' से छात्रवृत्ति मिली । युवावस्था में उनका अंतर्मुखी स्वभाव बदलता गया और स्कूल के अंतिम दो वर्षों में उन्होंने नाटकों में काम करना आरंभ किया ।

1.1.5 पारिवारिक जीवन -

मृदुला के परिवार में लड़का-लड़की ऐसा भेद नहीं माना जाता था । मृदुला की चार बहनें और एक भाई हैं । हर तरह की स्वतंत्रता मिलने के कारण सभी भाई-बहनों को अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाने का अवसर प्राप्त हुआ । सभी उच्च शिक्षा से विभूषित हैं । मृदुला पर उनकी माँ का विशेष प्रभाव रहा । उनकी माँ सुशील, सुंदर और संवेदनशील नारी थीं । उन्होंने अपने बच्चों का अधिक लाड़-प्यार तो नहीं

किया, फिर भी वे एक आदर्श माँ थीं । मृदुला के पिताजी को आर्थिक समस्याओं के कारण अपनी सारी संपत्ति खोनी पड़ी । अपने तथा अपने भाई के परिवार की उपजीविका के लिए नौकरी करनी पड़ी थी । मृदुला के लेखिका बनने में उनके पिताजी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । वे साहित्य में गहरी रूचि रखते थे । वे अंग्रेजी के पत्रकार तथा हिंदी के समालोचक भी थे । उन्हें इतिहास में भी विशेष रूचि थी ।

1.1.6 वैवाहिक जीवन :-

सन् 1963 में मृदुला का विवाह हुआ । वे शादी से पूर्व अपने पति से मिल चुकी थीं । इसलिए यह परस्पर पसंदगी के अनुसार उनका प्रेम-विवाह था । विवाह के पश्चात् मृदुला अपने पति के साथ सन् 1974 तक दिल्ली के बाहर कर्नाटक, बिहार, बंगाल के औद्योगिक क्षेत्रों में रही । उनके दो पुत्र हैं ।

मृदुला ने तीन बरस तक प्राध्यापक के रूप में कार्य किया । परंतु औद्योगिक क्षेत्रों में स्कूल, कॉलेज उपलब्ध न होने कारण तथा जो अर्थशास्त्र वह पढ़ा रही थी, उसका हमारी देश की अर्थव्यवस्था से कोई मेल न देख उनकी पढ़ाने की रूचि कम होती गई । अत: उन्होंने नौकरी छोड़ दी ।

शादी से पूर्व मृदुला छोटे से मकान में रहती थीं । उस छोटे-से सोने के कमरे में अकेलापन खोजती । उनकी यह हालत देखकर उनके पिताजी ने उस मकान में पर्दे लगवाकर उनके लिए एक छोटा-सा कमरा बना दिया । वे लिखती हैं - " मेरी अलग दुनिया बस गयीं । पलंग का कोना मेरा अपना अलग घर हो गया जहाँ लेटकर या बैठकर मैं कभी पर्दा सरकाकर खिड़की से सड़क देख पाने के लिए अपनी नजर में चौथा आयाम पैदा कर सकती थी ।"[1]

मृदुला गर्ग की शादी के बाद भी उनका मकान छोटा था । परंतु उसमें रहनेवाले भी कम थे । लेकिन बाद में पति की तरक्की के कारण घर में आने-जानेवालों की संख्या भी बढ़ गई । साथ में दूरवाणी का शोर भी बढ़ गया । इन सब में मृदुला को अपना अलग कमरा तभी मिला जब उन्हें सिरदर्द के कारण मूर्च्छा आ गई थी । अपनी रचना प्रक्रिया को जारी रखने के लिए उन्होंने जब-तब बीमारी का बहाना करना आरंभ किया । जब भी वे कहती हैं कि, उनकी तबीयत ठीक नहीं, देखकर उनके परिवार के सदस्य उन्हें अकेला छोड़ देते थे ।

1.1.7 पुरस्कार :-

मृदुला की सभी कृतियाँ चर्चित रही हैं । ' उसके हिस्से की धूप ' इस उपन्यास को मध्य प्रदेश साहित्य परिषद द्वारा पुरस्कार मिला । सन् 1974 में ' एक और अजनबी ' नामक नाटक को आकाशवाणी का वार्षिक पुरस्कार प्राप्त हुआ । इसके ही साथ उनके ' चित्तकोबरा ', 'अनित्य ', ' मैं और मैं ', ' कठगुलाब ' बहुचर्चित उपन्यास रहे हैं ।

1.1.8 प्रभाव :-

मृदुला गर्ग पर उनके पिताजी और हिंदी के आधुनिक साहित्यकार जैनेंद्रकुमार का प्रभाव अधिक रहा है । पिताजी आजादी के कायल होने के कारण स्वतंत्रता के कारण अनेक दीवानें उनके घर आते थे । जैनेंद्रकुमार को मृदुला गुरु तथा बंधू के रूप में देखती हैं । बहुत कम उम्र में उन्होंने जैनेंद्रकुमार के साहित्य को पढ़ना आरंभ किया । जैनेंद्रकुमार ने - '' लेखक को पुरस्कार के बजाय तिरस्कार मिले तभी वह अच्छा लिख सकता है, पुरस्कार साहित्यिक नहीं, सामाजिक चीज है, तिरस्कार साहित्यिक । अलग सोचोगे, अलग लिखोगे, तो यह सम्पदा जरूर मिलेगी । संजोये रखना एक दिन काम आयेगा ।''[2] यह गुरुवाक्य दिया, जो मृदुला के हर वक्त काम आता गया । मृदुला का मानना है कि आज के लेखन में कहीं-न-कहीं जैनेंद्रकुमार के चिंतन की झलक तथा उनका स्त्री विषयक दृष्टिकोण होता ही है ।

1.1.9 रचना-प्रक्रिया :-

अपनी रचना-प्रक्रिया के बारे में मृदुला ने विवरण दिया है - '' 1975-76 के आपात्काल में उनकी मुलाकात एक कम उम्र की लड़की से हुई । उस पर सरकार विरोधी होने का आरोप लगाया था । उसके घरवालों ने घबराकर उसे विदेश भेज दिया । अपने देश की स्थिति को लेकर विदेश में भी उसका मन उद्विग्न रहा । बरसों बाद वह लौट भी आई, परंतु कुछ ही दिनों बाद उसने आत्महत्या कर ली । कारण मैं नहीं जानती । पर उसके कुछ पत्र मैंने पढ़े और मुझे लगा जैसे वे मैंने ही लिखे हों । बरसों वह मेरे मन को झकझोरती रहीं ।''[3] यह रचना-प्रक्रिया की पृष्ठभूमि रही है । दूसरी घटना यह रही कि, आपात्काल के दौरान ही मृदुला के पिताजी का देहांत हो गया । इस घटना के कारण मृदुला भी आत्महत्या करने की सोच रही थी । वह सोच रही थी, कि आदमी जिंदा रहे या न रहे कोई खास फर्क नहीं पड़ता । उन्हें लगातार एक हफ्ता सिरदर्द रहा । एक दिन बरामदे में घूमते-घूमते उनके मन में विचार आया कि छज्जे से कूदकर आत्महत्या कर लें, परंतु वह इतना साहस न जुटा पायी और वापस कमरे में आकर लिखना आरंभ किया । यही ' अनित्य ' उपन्यास का पहला खंड है । इसके बाद उनका सिरदर्द गायब हो गया ।

मृदुला की रचना-प्रक्रिया में एक और घटना महत्त्वपूर्ण रही । मृदुला ने एक कहानी लिखी 'टोना' जो 'चित्तकोबरा' उपन्यास का अंश है । इसे लिखने के बाद उन्हें इतनी आनंदानुभूति हुई कि उनके मन म विचार आया अब आत्महत्या कर ले । अब जीने की कोई जरुरत नहीं है । वे कहती हैं कि - '' यही भावना मैंने उपन्यास लिखते हुए महसूस की थी । मेरी इच्छा होती है कि मैं अपने उपन्यास

को एक प्वाईंट पर ले जाकर छोड़ दूँ । फिर मुझे परवाह नहीं कि उपन्यास कहाँ जाता है "[4] मृदुला के अनुसार वह रचना-प्रक्रिया को उद्‌घाटित नहीं कर सकती, बल्कि ठोस विवरण ही दे सकती हैं ।

मृदुला के व्यक्तित्व के बारे में हम सार रूप में कह सकते है कि मृदुला गर्ग के माता-पिता स्वतंत्र विचारों के व्यक्ति थे । इसलिए बचपन से ही वैचारिक स्वतंत्रता होने के कारण उनका व्यक्तित्व स्वतंत्र रूप में विकसित हुआ है । उन्हें अपने विचार प्रकट करने की आजादी थी । माता-पिता दोनों के व्यक्तित्व का प्रभाव उनके साहित्य पर पड़ा है । उनके पिता आजादी की लड़ाई के समर्थक थे । इस राजनीतिक पृष्ठभूमि पर उन्होंने 'अनित्य' उपन्यास लिखा है, जो मनोवैज्ञानिक उपन्यास का एक सशक्त उदाहरण है ।

मृदुला गर्ग की माँ एक सुंदर सुशील तथा संवेदनशील नारी थी । उनका मृदुला पर काफी प्रभाव रहा । इसलिए शायद मृदुला के साहित्य में परंपरागत नारी का चित्रण करने की अपेक्षा आधुनिक नारी को अधिकतर चित्रित किया है ।

'उसके हिस्से की धूप', 'चित्तकोबरा' जैसे उपन्यास लिखकर अपने साहसपूर्ण स्वभाव को उजागर किया है । 'मैं और मैं' तथा 'अनित्य' उपन्यास उनके जीवन की अनुभूतियों पर आधारीत हैं । इन उपन्यासों में मृदुला ने अपने निजी जीवन के अनुभव चित्रित किए हैं । मृदुला के व्यक्तित्व से मिलती-जुलती नायिकाएँ उनके साहित्य में प्रतिबिंबित हुई हैं ।

1.2 कृतित्व :-

वर्तमान युवा पीढ़ी की लोकप्रिय लेखिका मृदुला गर्ग ने महिलाओं के परंपरागत लेखन से हटकर जीवन की सच्चाईयों को बड़े ही बेबाक ढंग से चित्रित किया है । मृदुला ने अपने साहित्य में नारी समस्याएँ चित्रित की हैं । परंपरागत समस्या अथवा लेखन लिखने की अपेक्षा मृदुला ने नारी का नया रूप, उसके विचार, अपेक्षाएँ, कुंठा चित्रित की है । नारी मन के विविध पहलू अपने उपन्यास तथा कहानियों में चित्रित किए हैं । 'अनित्य' तथा 'चित्तकोबरा' उपन्यास विवादास्पद और बहुचर्चित रहे हैं । उनकी अब तक निम्नलिखित रचनाएँ प्रकाशित हो चुकीं है -

1.2.1 उपन्यास :-

1.	वंशज	:	हिंद पाकेट बुक्स दिल्ली,	प्र. सं. 1973
2.	उसके हिस्से की धूप	:	राजकमल पेपर प्रकाशन, दिल्ली	प्र. सं. 1974-75
3.	चित्तकोबरा	:	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली	प्र. सं. 1978
4.	अनित्य	:	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली	प्र. सं. 1979-80

5.	मैं और मैं	:	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली	प्र. सं. 1984
6.	कठगुलाब	:	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली	प्र. सं. 1996

1.2.2 कहानी संग्रह :-

1.	कितनी कैदें	:	इंद्रप्रस्थ प्रकाशन	1975
2.	टुकड़ा-टुकड़ा आदमी	:	नेशनल पब्लिकेशन हाऊस, दिल्ली	1977
3.	डेफोडिल जल रहे हैं	:	अक्षर प्रकाशन	1978
4.	ग्लेशियर से	:	प्रभात प्रकाशन, दिल्ली	1980
5.	उर्फ सैम	:	राजकमल प्रकाशन, दिल्ली	1986
6.	शहर के नाम	:	ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली	1990
7.	मेरे देश की मिट्टी, अहा !	:	नेशनल पब्लिकेशन हाऊस, दिल्ली	2001

1.2.1 उपन्यास साहित्य :-

मृदुला गर्ग ने अब तक छः उपन्यास लिखे हैं । अपने सभी उपन्यासों में नारी मन की अनेक तर्पे खोलने में लेखिका काफी हद तक सफल हो गई है । 'चित्तकोबरा' तथा 'अनित्य' दोनों उपन्यास विवादास्पद रहे । 'चित्तकोबरा' के प्रकाशन के तुरंत बाद श्लील-अश्लीलता का जो विवाद उठ खड़ा हुआ उसकी अनूगुँज आज भी साहित्य की सरहदों पर सुनाई पड़ती है । 'अनित्य' उपन्यास आज भी हिंदी साहित्य जगत में चर्चा का विषय बन चुका है । 'वंशज' उपन्यास में नौकरशाह वर्ग के एक परिवार की जीवंत कहानी है, जिसमें जिंदगी के विद्रुपता भरे यथार्थ से सीधा साक्षात्कार किया है ।

1.2.1.1 वंशज :-

प्रस्तुत उपन्यास सन् 1973 को लिखा गया, परंतु इसका प्रकाशन ' उसके हिस्से की धूप ' के बाद हो गया । प्रस्तुत उपन्यास में नौकरशाह वर्ग के एक परिवार की जीवंत कहानी है । इस उपन्यास में पारिवारिक संघर्ष के रूप में सरकारी नौकरशाही के प्रति विद्रोह प्रस्तुत किया गया है । इसमें पिता व्यवस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं, तो बेटा नई पीढ़ी की समस्याएँ लेकर पिता से लड़ता है । यह उपन्यास दो पीढ़ियों में अंतराल, पिता और पुत्र की दो दृष्टियों में अंतर और टकराहट को उजागर करता है । इस्में पिता शुक्लासाहब, जिनकी पत्नी मर चुकीं है और जो पाश्चात्य आचार और विचार में विश्वास रखते हैं, अपने पुत्र को इसी साँचे में ढालना चाहते है, लेकिन पुत्र सुधीर इसके प्रति विद्रोह करता है । इसलिए यह उपन्यास प्रेम के बदलते हुए स्वरूप की दृष्टि से महत्त्व नहीं रखता । उपन्यास में मनोवैज्ञानिक संघर्ष एवं अंतर्द्वंद्व चित्रित हुआ है ।

1.2.1.2 उसके हिस्से की धूप :-

प्रस्तुत उपन्यास सन् 1974-75 में लिखा गया है । जितेन, मधुकर और मनीषा ये तीन पात्र इस उपन्यास के केंद्र में हैं । उपन्यास की नायिका मनीषा अपने पति का साथ चाहती है, लेकिन पति जितेन अपनी व्यस्तता के कारण मजबूर है । सह अध्यापक मधुकर से पहचान होने पर मनीषा मधुकर से प्यार करने लगती है । इस उपन्यास में नायिका मनीषा के द्वारा नारी मन के द्वंद्व के साथ ही नारी के आधुनिक विचार और रूप व्यक्त किए हैं । इस उपन्यास के बारे में सरिताकुमार लिखती हैं - '' उपन्यास में प्रेम के विविध रूपों को उभारा गया है, जैसे त्रास, पीड़ा, घृणा,जलन, द्वेष और हिंसा । इन भावनाओं का निजी महत्त्व है और इनकी जटिलता को बड़ी कुशलता से सीधी और सहज भाषा में व्यक्त किया गया है ।''[5]

मनीषा जितेन से तलाक लेकर मधुकर से शादी करती है, परंतु उसे चैन नहीं मिलता । शिशु का भाग्य भी अल्पकालीन मिलता है । कुछ साल पश्चात जितेन से मिलने पर उसे अपना शरीर सौंपती है । अंत में मनीषा सोचती है कि मधुकर से विवाह करने पर भी वह अपनी कुण्ठा या अकेलेपन से मुक्त नहीं हो पायी है । इसलिए वह अंत में अपना खाली समय लिखने में व्यतीत करने का निश्चय करती है । प्रस्तुत उपन्यास में स्त्री की इच्छा, आकांक्षाओं का सूक्ष्मता से चित्रण किया है ।

1.2.1.3 चित्तकोबरा :-

प्रस्तुत उपन्यास सन् 1978 में लिखा गया है । पहले से ही यह उपन्यास श्लील-अश्लीलता के घेरे में रहा है । इसमें महानगर की संस्कृति, नैतिकता साथ ही नारी जीवन का चित्रण प्रस्तुत किया है । उपन्यास की नायिका मनु दो पुरुष, पति और मित्र रिचर्ड के बीच मानसिक संघर्ष में झुलती रहती है । मनु और रिचर्ड दोनों भी विवाहित होते हुए भी एक-दूसरे से प्रेम संबंध रखते हैं । मनु नास्तिक है तो रिचर्ड चर्च का पादरी । दोनों बेमेल होते हुए भी प्रेम-संबंध रखते हैं । रिचर्ड अन्य लोगों की मदद् करने के लिए चला जाता है, परंतु मनु अपनी बेटी बीमार होने के कारण जा नहीं पाती । मनु अंत तक रिचर्ड से प्रेम करती रहती है । प्रस्तुत उपन्यास में प्रेम का त्रिकोण प्रस्तुत किया है । नारी मन की इच्छाएँ, आकांक्षा, आधुनिकता, भौतिकवादिता का चित्रण प्रस्तुत किया है । प्रौढ़ वर्ग के पाठकों के लिए प्रस्तुत उपन्यास पठनीय है ।

1.2.1.4 अनित्य :-

यह उपन्यास सन् 1979-80 के दरम्यान लिखा गया है । स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि पर लिखा मनोवैज्ञानिक उपन्यास है । इस उपन्यास का पात्र ' अनित्य ' अपने यथार्थ को देखता है और

पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता है । इसमें समाज का मानव पर हुआ परिणाम मनोवैज्ञानिकता के आधार पर प्रस्तुत किया है । राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि स्थितियों पर व्यंग्य किया है । उपन्यास का पात्र ' अविजित ' स्वतंत्रता आंदोलन में भाग ले चुका है । वह यूनियन का नेता, टेनिस में चॅम्पियन रह चुका है । अपनी सुख-सुविधा तथा प्रतिष्ठा के लिए श्यामा से शादी करता है । उसकी तीन बेटियाँ और एक बेटा भी है परंतु व्यस्तता के कारण वह खुद अपनी बेटियों को पहचान नहीं पाता । वह किसी से भी संतुष्ठ नहीं हो पाता । कुण्ठा, निराशा, क्षोभ, असहायता आदि के कारण उसका मानसिक द्वंद्व बढ़ता जाता है । इसी में उसे अपने कॉलेज जीवन की प्रेमिकाएँ काजल और संगीता मिलती हैं, परंतु अविजित की वृत्ति देख वह उसे ठुकरा देती हैं। अविजित की कमजोरियाँ सिर्फ उसका छोटा भाई अनित्य जानता है, उसे हर वक्त उसकी कमजोरियाँ, गलतियाँ दिखाता है । इसी बीच उसकी दो बेटियाँ और अनित्य भी उसे छोड़कर चले जाते हैं, इससे वह मानसिक द्वंद्व से घिर जाता है। अंत में कार दुर्घटना में ' सेरबेरल मलेरिया ' का शिकार बनता है ।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने राष्ट्रीय समस्या, सामाजिक तथा नैतिकता की समस्याओं को उजागर किया है । पात्रों की मानसिकता, उनकी द्विधा मनस्थिति, वर्तमान युगीन स्थिति भी प्रस्तुत की है ।

1.2.1.5 मैं और मैं :-

' मैं और मैं ' उपन्यास सन् 1982-83 के दरम्यान लिखा गया है । इसमें कटु यथार्थ, मनुष्य का स्वार्थ, उसकी लालसा आदि का चित्रण है । इसमें लेखक, लेखन और वास्तविक जीवन आदि का चित्र प्रस्तुत किया है । यह दोहरे दोहन और शोषण की कथावस्तु है । अहम् के कारण कौशल और माधवी का मानसिक संघर्ष, माधवी का अपराधबोध और इसी कारण उसका कौशल के द्वारा हुआ मानसिक और आर्थिक शोषण आदि का चित्र प्रस्तुत किया है । प्रस्तुत उपन्यास में अहम् महानगरीय जीवन, झूठी प्रतिष्ठा, वर्तमानकालीन समस्याएँ भी चित्रित की हैं । प्रस्तुत उपन्यास सामाजिक पृष्ठभूमि पर लिखा मनोवैज्ञानिक उपन्यास है । माधवी अपने अपराध बोध के कारण कौशल के जाल में फँसती है, अपने साहित्य को अधिक महत्त्व देने के कारण मानवी संबंधों को अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करने लगती है । माधवी की कमजोरियाँ जानकर कौशल अपना स्वार्थ सिद्ध करने लगता है । अंत में सच्चाई जानकर झूठे मोहजाल में फँसी माधवी कौशल को ही जाल में फँसा देती है । कौशल के रूप में खण्डित व्यक्तित्व का चित्रण किया है ।

1.2.1.6 कठगुलाब :-

मृदुला गर्ग ने 1996 में प्रकाशित ' कठगुलाब ' उपन्यास में आधुनिक नारी चेतना को विभिन्न बिंदुओं से परखने का प्रयास किया है । स्मिता, मरियान, असीमा, नीरजा, नमिता और नर्मदा आदि नारी पात्र इसमें पाए जाते हैं । प्रस्तुत उपन्यास मानव जीवन के गहन अध्ययन का प्रतिफलन है । संपूर्ण उपन्यास में एक भी सलामत परिवार नहीं है । छिन्न-भिन्न, एकाकी, नीरव, दुखदायी, बंजर होते जीवन का प्रतिनिधित्व हर पात्र करता है । प्रत्येक पात्र अपने अतीत को काटकर फेंक देना चाहता है, परंतु अगले ही कदम पर वह अपने अतीत से उलझ जाता है । ' कठगुलाब ' बाँझ का प्रतीक है, जो काष्ठ का एक ऐसा फूल है, जो अपनी उत्पत्ति के साथ ही अपने विनाश का कारण भी है ।

1.2.2 कहानी साहित्य :-

आठवें दशक के कहानीकारों में मृदुला नेअपना एक विशिष्ट स्थान बना लिया है । मृदुला ने नारी-मन और उसके अस्तित्व को बदलती हुई परिस्थितियों से जोड़ कर देखा और इसी कारण इनका लेखन पूर्ववर्ती लेखन से स्पष्टत: प्रस्थान करता दिखाई देता है । आज की नारी की सामाजिक नियति और मानसिकता को बड़ी गहराई से तथा मार्मिकता से उन्होंने उभरा है । मृदुला न तो नारी को झूठ महिमान्वित करती है और न उन्हें नकली रूप में पीड़ित दिखाती है । अपनी समूचि परिणतियों के साथ एक विशेष दायरे में घिरी जो नारी है, उसकी पहचान वह कराती है ।

'कितनी कैदें' यह वह कहानी संग्रह है, जिसने मृदुला को कहानीकार के रूप में हिंदी साहित्य संसार के सम्मुख उपस्थित किया । ' कितनी कैंदे ' के प्रकाशन के बाद मृदुला के कथाकार की यह छबि बन गई कि वह नारी के यौन अनुभवों, यौन और प्रेमविषयक आधुनिक जीवन-दृष्टि को अपनी रचनाओं में पूरे खुलेपन, एक बोल्डनेस से चित्रित करती हैं । नारी मन की कुशल चित्तेरी के रूप में वह हिंदी जगत् में ख्याति प्राप्त है ।

1.2.2.1 कितनी कैदें :-

मृदुला गर्ग का 'कितनी कैदें' प्रसिद्ध कहानी संग्रह है । उनकी अधिकतर कहानियाँ यौन अनुभवों और प्रेमविषयक आधुनिक जीवनदृष्टि एवं यौन समस्याओं को लेकर लिखी गई है । 'कितनी कैदें' शीर्षक कहानी इन्ही समस्याओं को लेकर लिखी गई हैं । आधुनिक विचारों से अनुप्रणित हुए माता-पिता अपनी बेटी को अत्याधुनिक बनाना चाहते थे । अत: माँ उसे फैशन करने, अंग्रेजी बोलने, पार्टियों में भाग लेते देखकर बहुत खुश होती है, परंतु उन्होंने फैशन के नाम पर अंग्रेजी सभ्यता के पहलुओं के बारे में कभी सोचा नहीं था । धीरे-धीरे बेटी मीना मादक द्रव्यों का सेवन करने लगी, लडकों के साथ रहने

लगी, परिणाम वही हुआ, मीन पर उसके साथी युवकों द्वारा बलात्कार होता है, इस हादसे ने मीना का जीवन शापग्रस्त बना दिया । यौन समस्या से ग्रस्त मीना विवाह के बाद भी सामान्य नहीं हो पाती । बंद लिफ्ट में पतिद्वारा बलात्कार होने पर वह सामान्य हो जाती है, परंतु अपना अतीत पति के सामने खोल देने से उसका दांपत्य जीवन हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है ।

' लौटना और लौटना ' कहानी पारिवारिक और आर्थिक समस्या को उजागर करती है । कहानी में माता-पिता-पुत्र के ममताभरे संबंधों में आया विघटन चित्रित है । लेखिका ने भारतीय युवकों पर पाश्चात्य संस्कृति का भूत किस प्रकार सवार हो रहा है और विदेशी सभ्यता ने भारतीय परिवारों को तोड़ने में किस प्रकार सहयोग दिया है । यह कथ्य कहानी के मूल में है । ' अंदर-बाहर ' कहानी विघटित परिवार की है, माता-पिता-पुत्र इनके बीच निर्माण हुई दूरी चित्रित है । ' गुलाब के बगीचे ' कहानी का कथ्य भी यही है । ' विचल ' कहानी में उच्चवर्गीय जीवन का दर्शन कराया है । ' एक और विवाह ' कहानी नारी मन के भावों को स्पष्ट करती है, तो 'दुनिया का कायदा' कहानी उच्चवर्गीय जीवन की झलक प्रस्तुत करती है ।

तात्पर्य प्रस्तुत कहानीसंग्रह की समस्त कहानियाँ पारिवारिक विघटन की समस्या को उद्घाटित करते हुए माता-पिता-संतान इनके बीच उत्पन्न दरार का चित्रण करती है तथा भारतीय परिवारों पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव दिन-ब-दिन कैसे हावी हो रहा है, जिससे भारतीय नवयुवक अपनी संस्कृति को ही भुला रहे हैं, इस तथ्य को बखूबी वर्णित किया गया है ।

1.2.2.2 टुकड़ा-टुकड़ा आदमी :-

प्रस्तुत कहानी संग्रह बड़ा ही महत्त्वपूर्ण रहा है । ' अवकाश ' कहानी में पति-पत्नी में तनाव और अलगाव को बड़े साहस के साथ उजागर किया है । ' रुकावट ' कहानी जो अधिक नंगी और खुली है, एक विवाहिता नारी की समस्या को उठाती है, प्रस्तुत कहानी नारी के कुण्ठित मन और उसके नैतिक पतन की कहानी है । कहानी की नायिका रीता पति के होते हुए भी पर पुरुष से संभोग करती है । रीता के जीवन की विडम्बना को पैनी दृष्टि से अंकित किया है । ' तुक ' कहानी में एक पत्नी की त्रासदी को उजागर किया गया है, जिसका दृष्टिकोण अपने पति से भिन्न है, कि वह उखड़-उखड़कर सँभलने की कोशिश करती रहती है । वह अपने पति से प्यार तो करती है लेकिन अपने विवाहित जीवन में अपने को मिसफिट पाती है । इस कहानी में पति-पत्नी के विचारों में अनमेल होने के कारण उत्पन्न स्थिति का चित्रण है । ' बेमेल ' में एक भारतीय नारी और विदेशी पुरुष के आपसी संबंध होते हैं । दोनों पात्र विवाहित हैं, उनका बेमेल मेल दिल्ली में होता है । मृदुला ने बेमेल के संकेत को बार-बार दोहराया है ।

प्रस्तुत कहानी संग्रह आधुनिक मनुष्य के जीवन की भौतिकता, कुंठा और नैतिक स्तर की कहानियाँ प्रस्तुत करता है ।

1.2.2.3 उर्फ सैम :-

यह कहानीसंग्रह 1986 में प्रकाशित हुआ है । इस संग्रह में बारह कहानियाँ संकलित हैं । 'उर्फ सैम ', ' वितृष्णा', ' उधार की हवा ', ' बॉसफल ', ' नहीं ', ' मिजाज ', ' जिजीविषा ' आदि पारिवारिक कहानियाँ हैं, जिनमें मानवी स्वभाव के कई पहलूओं को शब्दांकित करने का प्रयास किया गया है । इनमें विभिन्न कथात्मक स्थितियों को लेखिका ने रेखांकित किया है । उनमें मानवी स्वभाव की विविध परतें अनायास ही खुलने लगी हैं । ' उर्फ सैम ' कहानी अपनी मिट्टी के लिए भारतीय भोजन तथा अपनी भूमि के लिए तड़पते भारतीय आत्मा की दस्तावेज है, जिसके मध्यम से लेखिका ने परदेश के आकर्षण में फँसे भारतीय लोगों को वास्तविकता का ज्ञान दिलाने हेतु कहानी का सृजन किया है ऐसा प्रतीत होता है । 'वितृष्णा ' पति-पत्नी संबंधों की शुष्कता, नीरसता एवं ठंडेपन को उद्घाटित करती है । पति का उपेक्षापूर्ण व्यवहार पत्नी को हमेशा के लिए पति से वितृष्ण बनाता है कि वह पति का चेहरा भी भूल जाती है । '' उसने देखा मोटर साईकिल पर घसीटता हुआ वह आदमी धीरे-धीरे उसके घर के आँगन में बढ़ा आ रहा है, अब उसका चेहरा साफ दिखाई दे रहा है . . . अरे यह तो . . . उसकी आँखों के किवाड़ बंद हो गए, शरीर में शिथिलता आ गयी ।''[6]

' अगली सुबह ' कहानी विभाजन की घटना का स्मरण होने से भयभीत होनेवाले लोगों की है । इंदिरा गांधीजी को गोली से उड़ा देने से भयभीत हुए लोगों की मानसिक दशा का चित्र है । ' उधार की हवा ' कहानी में कर्मनिष्ठ पिता अब भी खेती में काम करता है । पुरानी एवं नई पीढ़ी के विचारों का संघर्ष कहानी में उद्घाटित होता है । ' बॉसफल ' कहानी में दादी-पोते के द्वारा पुरानी-नई पीढ़ी के अंतर को स्पष्ट किया है । बीच में बेचारी बहू कुछ न कुछ कह पाने की घुटन का अनुभव करती है, सास-बहू में पारिवारिक कलह का रिश्ता नहीं है, फिर भी कुछ अनबन की स्थिति है । ' नकार ' कहानी आर्थिक समस्या को उजागर करती है । ' बेनकाब ' गरीबों का हमदर्द बनकर खून चूसनेवाले धनियों को सजा देनेवाले आदमी का आत्मकथन है । ' जिजीविषा ' कहानी में बीमार पति के लिए अपना जीवन समर्पित करनेवाली स्त्री को चितेरा गया है । पत्नी के सेवाभावी, समर्पणशील वृत्ति को देखकर पति सोचता है - ''मैं भी सोचता हूँ - मैं अब तक जिंदा हूँ ? क्यों ? कैसे ? किसलिए ? फिर अपनी पत्नी की तरफ देखता हूँ ? सब सवालों के जवाब मिल जाते हैं . . . मेरी पत्नी । जीवन मेरा है, पर जिजीविषा उसकी ।''[7] इस प्रकार यह कहानी रुग्ण व्यक्ति की मानसिक दशा की अभिव्यक्ति है । 'विनाशदूत'

कालिदास के 'मेघदूत' का नया रूप चित्रित करती है । तो 'चौथा प्राणी' कहानी मनोवैज्ञानिक ढंग पर लिखी गई है ।

1.2.2.4 डेफोड़िल जल रहे हैं :-

प्रस्तुत कहानीसंग्रह 1978 में लिखा गया है । इस कहानीसंग्रह में लम्बी और महत्त्वपूर्ण कहानियाँ संग्रहीत हैं । लेखिका की अधिकतर कहानियाँ व्यक्तिपरक पीड़ा की संवेदना प्रकट करनेवाली फिर भी पारिवारिक परिवेश के साथ जुड़ी हुई हैं। शीर्षक कहानी में कश्मीर घाटी के गुलमर्ग के बर्फीले एकांत में घटित दु:खद और त्रासद स्थितियों, मृत्युबोध और नारी-हृदय के अनदेखे बिंदुओं का प्रतीकात्मक अंकन है । डैफोड़िल, आइरिस, नर्गीस आदि फूलों के प्रतीकों के माध्यम से बर्फीले परिवेश के सांकेतिक चित्रण के सहारे पुरुष की स्वार्थी एवं सुखान्वेषी प्रवृत्ति तथा नारी मन की करुणा, अकुलाहट आदि भावों का स्क्षूम अंकन किया है । 'मेरा' कहानी आज के मध्यवर्गीय परिवार के नौकरीपेशा स्त्री-पुरुष के बीच बच्चे के जन्म की समस्या को लेकर उत्पन्न तनाव का एक जीवंत चित्र है । वर्तमान युग में आत्मकेंद्रित मनुष्य अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए आनेवाले बच्चे को बाधक मानता है, इसलिए पत्नी को ॲबॉर्शन करने के लिए कहता है । मातृत्व के लिए प्यासी 'स्त्री' और महत्वाकांक्षा से प्रेरित 'पिता' इनके बीच अनकहा संघर्ष है । 'स्थगित कल' कहानी में मृत्युबोध से ग्रस्त मानव के मानसिक संघर्ष का चित्र हैं। प्रविण और विपिन के जरिए यह संघर्ष स्पष्ट होता है । लेखिका की कहानियाँ कलात्मकता और रोचकता के साथ-साथ गहरे पाठकीय स्तर पर परिवर्तित होती हैं । इस कहानीसंग्रह में नवीनतम विषय कहानियों द्वारा प्रस्तुत किए हैं ।

1.2.2.5 ग्लेशियर से :-

प्रस्तुत कहानीसंग्रह सन् 1980 में प्रकाशित हुआ है । इस कहानीसंग्रह में १६ कहानियाँ संग्रहित हैं । इन कहानियों में व्यक्तिगत भावनाओं का चित्रण अधिक तथा पारिवारिक संवेदनाओं का कम अंकन हुआ है । संस्कारबद्ध नैतिकता के घेरे से बाहर आने के बाद के संकट और उस संकट से जुड़ी यातनापूर्ण मनस्थितियों का विश्लेषण है। 'झुलती-कुरसी' कहानी में व्यक्ति के मानस की आकुलता एवं तद्जन्य स्थितियों का सूक्ष्म एवं चित्रात्मक दस्तावेज है । 'तुक' कहानी में पति-पत्नी के बीच रूचिवैषम्य के होते हुए भी पत्नी अपने प्रेम एवं संवेदना के कारण पति से बंधी रहने के लिए मजबूर है । 'खाली' कहानी में भी आज की कामकाजी नारी अर्थ के लिए मातृत्व को बाधक मानती है । वर्तमान युगीन अर्थकेंद्रित परिवेश ने स्त्री की मानसिकता को बदल दिया है । 'अलग-अलग कमरे' लेखिका की सशक्त कहानी मानी जाती है । पिता-पुत्र के वैचारिक संघर्ष के जरिए दो पीढ़ियों के वैचारिक असांमजस्य पुरानी और नई

पीढ़ी के द्वारा इसमें चित्रित है । पिता अपने आदर्श और आस्थाओं की रक्षा के लिए सक्रीय है, परंतु पुत्र परिवर्तित परिवेश में उन मूल्य को निरर्थक मानता है । सेवा, करुणा, दया आदि उदात्त मूल्य पैसों के सामने तुच्छ हो गए हैं, यही सत्य पिता के प्रति पुत्र के उपेक्षित व्यवहार से स्पष्ट होता है । 'खरीदार' कहानी में कामकाजी नारी की बदलती मानसिकता को व्यक्त किया है ।

1.2.2.6 शहर के नाम :-

इस कहानीसंग्रह में ग्यारह कहानियाँ संकलित हैं । इन कहानियों का मूल स्वर 'व्यक्ति समाज में नहीं जीता समाज को भी जीता है ।' एक की पीड़ा दूसरे की बने तभी मानवीय संवेदना जन्म लेती है, जो लेखक को पाठक से इस तरह जोड़ती है कि सृजन का अधिकार दोनों का साझा हो जाता है । गांव, शहर, देश और सारा का सारा परिवेश भी उसका अभिन्न अंग होता है और व्यक्ति का इनसे रिश्ता समाज के व्यक्तित्व को बनाता बिगाड़ता है । इस संग्रह की 'तीन किलो की छोरी', 'करार', 'अक्स', 'अनाड़ी', 'चक्करघिन्नी', 'बाहरीजन', 'वह मैं ही थी', 'रेशम', 'संगत', 'विलोम', 'शहर के नाम' कहानियाँ इसी रिश्ते और संवेदना से रंगी हैं । इनके पात्र बाहरीजन नहीं बने रहते, शहर के साथ उनका संबंध अनेक रंगों में खिलता है, फलता-फूलता, मुरझाता है और हर हाल में पाठक को बाध्य करता है कि वह जो घट चुका उसके आगे चलकर बार-बार चिंतन करे । 'तीन किलो की छोरी' में सन् 1990 में भी परिवार में बेटी का जन्म होने पर गरीब परिवार तो क्या धनी परिवार भी दु:खी होता है, कन्याजन्म की समस्या पति चाहे मार-पीट करे तो भी पति का अधिकार है यह शारदाबेन की धारणा वर्तमान स्थिति में भी नारी-पुरुष समानता पर व्यंग्य कसनेवाली है । 'करार' कहानी समाज में रुढ़ धार्मिक विश्वास की स्थितियों का अंकन करती है । 'अक्स' कहानी अपने आपको आधुनिक माननेवाले समाज में आज भी वधू परीक्षा, लड़की के विवाह की समस्या, पारिवारिक आत्मीय संबंधों की टूटने की प्रक्रिया, पारिवारिक विघटन की समस्या आदि समस्याओं के कई पहलूओं को शब्दांकित करती है । 'अनाड़ी' में अनाड़ी कामकाजी लड़की की कहानी है । 'चक्करघिन्नी' कहानी विनीता की है जिसने आदर्श पत्नी और आदर्श माँ बनने की जीवन की अपनी भूमिका सजोकर रखी थी । विनीता की माँ डॉक्टर थी । अपनी माँ की व्यस्त जिंदगी देखकर विनीता ने बचपन में ही निश्चय किया था कि वह घरेलु पत्नी बनकर अपना पूरा समय परिवार को देगी परंतु परिवर्तित परिवेश में पति और अपने ही बच्चों द्वारा बदलती धारणाओं को देखकर वह अपने अलग अस्तित्व की पहचान बनाना जरुरी समझती है । 'बाहरीजन' कहानी उसी परंपरागत मानसिक सोच को उजागर करती है । कितना भी धनी परिवार क्यों न हो 'घर में छोटा बच्चा होना चाहिए'यह आकांक्षा रखता है । उच्चवर्ग के परिवार में ब्याही गई नंदिनी को बच्चा न होने से सास ससुर बेचैन है । सास-ससुर

बहू इनके बीच अनकहे तनाव का चित्रण इस कहानी में है । 'वह मैं ही थी' और 'रेशम' कहानियों में नारी समस्या को चित्रित करते हुए महानगरीय सभ्यता में आत्मीय रिश्ते कैसे अजनबी होते जा रहे हैं, आत्मीयता किस प्रकार नष्ट हो रही हैं । इसका अंकन हुआ है । 'शहर के नाम' कहानी आज की रेस में शरीक होनेवाले इन्सान की कहानी है जिसके अंत में वह इस रेस से निकलकर अकेला और गुमनाम होकर रहना चाहता है ।

1.2.2.7 मेरे देश की मिट्टी : अहा ! :-

प्रस्तुत कहानीसंग्रह सन् 2001 की नवीनतम उपलब्धि है । इस कहानीसंग्रह में कुल दस कहानियाँ संकलित हैं । इसमें 'मेरे देश की मिट्टी : अहा !', 'मंजूर-नामंजूर', 'किस्सा आज का', 'जीरो-अक्स', 'इक्कीसवीं सदी का पेड', 'छलावा', 'कलि में संत', 'सात कोठारी', 'नेति-नेति', 'कान तोड़ उर्फ कर्णवीर' आदि कहानियाँ संग्रहित हैं ।

'किस्सा आज का' में अपने देश की आजादी के पचास बरस हो गए हों या सौ बरस स्थितियाँ तो दिनोंदिन बदतर ही हो रही हैं, हमारी व्यवस्था की चरम विकृतियों पर व्यंग्य किया है । 'जीरो-अक्स' में महिलावादी आंदोलन पर चोट की है । 'इक्कीसवीं सदी का पेड़' मनुष्य की एकांगी सोच और पर्यावरण में घुलते जहर को रेखांकित करती है । 'छलावा' फंतासी कथा है पर उसका अंत यथार्थवादी है ।

'कलि में सत' पढ़ना घोर धार्मिक लोगों को अच्छा नहीं लगेगा क्योंकि इसमें दशरथ, राघव, सीता और लछमन जैसे पात्रों की सांसरिक चर्चा तो है ही लीक से हटकर दशानन की भी चर्चा है । 'कान तोड़ उर्फ कर्णवीर' कहानी एक कृत्रिम छवि के पीछे छुपी कमजोरियों का उपहास है । 'सात कोठारी' सच और झूठ का घालमेल होने पर कटाक्ष है मृदुला गर्ग यहाँ लोक जीवन के काले पक्ष और उससे उपजे अंधविश्वास पर चोट करती हैं ।

प्रस्तुत कहानीसंग्रह की आलोचना करते हुए विनयबिहारी सिंह लिखते हैं - ''मृदुला गर्ग का ताजा कहानीसंग्रह 'मेरे देश की मिट्टी : अहा !' को पढ़ते हुए कई बार फंतासी फिल्म देखने का अनुभव होता है, लेकिन अचानक वे फंतासी के मर्म पर व्यंग्य का चाबुक मार कर पाठक को बहकने से रोक देती हैं ।''[8]

1.2.3 अन्य साहित्य :-

मृदुला गर्ग की लिखी कहानियों का जर्मन, चेक, रूसी अंग्रेजी भाषाओं में अनुवाद हुआ है । कई भारतीय भाषाओं में भी इनकी कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं ।

मृदुला ने 'एक और अजनबी', 'जादू का कालीन' नामक नाटक लिखे हैं । सन् 1979 को 'एक और अजनबी' नाटक को 'आकाशवाणी' वार्षिक पुरस्कार भी मिल चुका है ।

'तुम लौट आओ' नाम फिल्म मृदुला की कहानी पर आधारित है । इसमें मध्यवर्ग की महत्वाकांक्षा, विवाह या बेहतर पेशा इन दोनों में से एक चुनने की कशमकश, अपना व्यापार शुरु करने के सपने, अनचाही गर्भधारणा के कारण हुई मानसिक स्थिति आदि अनेक समस्याएँ 'तुम लौट आओ' का सार है ।

'भीतर-बाहर' कहानीसंग्रह का संपादन मृदुला ने किया है । इसमें राजस्थान के 41 शिक्षक साहित्यकारों की कहानियाँ संकलित हैं । ये कहानियाँ मानव जीवन के विविध रूपों का दर्शन कराती हैं ।

सन् 1970 से 'रविवार' पत्रिका में 'परिवार' शीर्षक के अंतर्गत स्तंभलेखन कर रही हैं । 'पर्यावरण के ऱ्हास का बच्चों पर प्रभाव' शोधकार्य भी पूर्ण किया है ।

हाल ही में मृदुला गर्ग की 'चुकते नहीं सवाल' किताब प्रकाशित हुई है । इसमें 'जोखिम उठाने से कतराती हिंदी कहानी', 'सत्ता और स्त्री', 'द्विभाषी संस्कृति', 'लोकतंत्र का सुहाग चिह्न' आदि लेख संकलित किए गए हैं । उनके इस पुस्तक पर राजेश श्रीवास्तव कहते हैं - ''इस तरह यह पुस्तक विविधवर्णी आलोक तरंगों को प्रक्षेपित करती ऐसी विचारोत्तेजक मणि है, जो एक साथ समाज-धर्म, साहित्य-भाषा, संस्कृति-सभ्यता, पर्यावरण, राजनैतिकता, मानवीयता आदि विचार किरणों से पाठक के मानस को आलोकित करती है, उसे उत्तेजित करती है ।''[9]

1.3 समकालीन कहानी लेखिकाएँ और मृदुला गर्ग :-

आधुनिक युग में साहित्य की हर विधा में लेखन की प्रक्रिया तेजी से चल रही है । किंतु आज कहानी साहित्य ही सर्वाधिक सशक्त, लोकप्रिय एवं प्रभावकारी विधा है । विपुल मात्रा में कहानी साहित्य लिखा जा रहा है । नि:संदेह रूप से इसमें लेखकों के साथ-साथ कथा-लेखिकाओं का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । समकालीन कथा लेखिकाएँ स्वयं नारी होने के कारण नारी हृदय की गहराई को चित्रित करने में सफल हो गई हैं । उन्होंने अपनी कहानियों में नारी को ही प्रमुख स्थान दिया है । आज के नारी लेखन में नारी-चेतना का एक सार्थक बिंब उभर रहा हैं - ''असल में महिला रचनाकारों की रचनाओं में इतिहास-वृत्ति से संघर्ष करती हुई और नवीन जीवन पॅटर्न पर चलती हुई नारी-चेतना अभिव्यक्त हुई है । यहाँ एक नई चेतना संपन्न संघर्षशील नारी उभर रही है ।''[10]

इस तरह समकालीन कथा लेखिकाओं की कहानियों में चित्रित नारियाँ एक ओर परंपरागत जड़ मूल्यों से संघर्ष करती हैं तो दूसरी ओर पुरुष के अतिरिक्त आधिपत्य से मुक्ति के लिए संघर्ष करती दिखाई

देती हैं । आधुनिक नारी में व्यक्तित्व की स्वतंत्र सत्ता प्रस्थापित करने की जो छटपटाहट है, वह आधुनिक समकालीन कहानियों में पूरी तरह चित्रित हुई है ।

आठवें दशक में महिला कहानीकारों का एक बृहत् वर्ग फला-फूला है, जिनमें प्रमुख हैं - मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, शिवानी, दीप्ति खंडेलवाल, रजनी पानिकर, मृदुला गर्ग चित्रा मुदगल, राजी सेठ, प्रतिमा वर्मा, सूर्यबाला, कृष्णा अग्निहोत्री, कृष्णा सोबती, सुधा अरोड़ा, मेहरुनिसा परवेज, कुसुम अंसल, मैत्रेयी पुष्पा, ममता कालिया,मालती जोशी, शशिप्रभा शास्त्री, इंदू बाली, मृणाल पाण्डे, अनिता औलक, निरुपमा सेवती, अमृता प्रीतम आदि । इन्होंने पर्याप्त मात्रा में कहानी साहित्य लिखा है । इनमें से अधिकांश लेखिकाओं के कहानी साहित्य की चर्चा हम निम्नांकित पंक्तियों में कर रहे हैं ।

1.3.1 शिवानी :-

जन्म -

समस्त महिला लेखिकाओं में सबसे विस्तृत एवं व्यापक उतनाही श्रेष्ठ स्तर का कहानीसंसार का सृजन शिवानी का है । शिवानी का जन्म सन् 1923 में राजकोट में हुआ ।

कहानीसंग्रह :-

1.	करिए छिमा	6.	रतिविलाप	11.	अपराधिनी
2.	लाल हवेली	7.	कृष्णवेणी	12.	गैंडा
3.	कैजा	8.	स्वयंसिध्दा	13.	पूतोंवाली
4.	रथ्या	9.	पुष्पहार	14.	शिवानी की श्रेष्ठ कहानियाँ
5.	माणिक	10.	विषकन्या		

शिवानी की हर एक रचना जीवन के रंग से रंगी हुई है । उन्होंने गंभीर साहित्यिक लेखक भी सहज और रोचक ढंग से लिखकर लोकप्रियता प्राप्त की । उनकी रचनाओं में कहीं पारिवारिक, कहीं सामाजिक और कहीं उत्कृष्ट सांस्कृतिक पहलू चित्रित हैं । उनकी हर कहानी मन को गहराई से स्पर्श करनेवाली अत्याधिक भावुक एवं संवेदनशील रचना है । पारिवारिक, सामाजिक हर एक पहलू को, समस्याओं को उद्घाटित करने का प्रयास उनकी कहानियों ने किया है । नारी संवेदनाओं की गहराई, भावनाओं की सुकुमारता एक प्रकार की रहस्यमयता, कौतूहलता कुमाऊँनी संस्कृति की विशेषताओं से पूर्ण उनकी कहानियाँ हैं । पारिवारिक संबंधों का, समस्याओं का सामाजिक परिवेश में सफलता से उद्घाटन हुआ है। कुमाऊं अंचल के रीतिरिवाज, परंपराएँ, विवाह आदि का सशक्त चित्रण उनकी कहानियों की विशेषताएँ हैं ।

1.3.2 कृष्णा सोबती :-

जन्म -

कृष्णा सोबती महिला कहानीकारों में एक समर्थ और प्रतिष्ठित लेखिका मानी जाती हैं । उनका जन्म 18 फरवरी, 1925 में गुजरात में हुआ । कृष्णा सोबती का लेखन अल्प होते हुए भी बड़ा महत्त्वपूर्ण है ।

कहानीसंग्रह :-

1. मित्रों-मरजानी
2. यारों के यार : तीन पहाड़
3. बादलों के घेरे

कृष्णा सोबती की रचनाओं के बारे में डॉ. नीरज जैन लिखते हैं - ''नारी जीवन के अंतरंग को पहचानने और उसे चित्रित करने में सिध्दहस्त कृष्णा सोबती की रचनाएँ अपनी निजी विशिष्टता लिए हुए हैं ।''[11] उनके समग्र कथा-साहित्य में नारी-चेतना मुखरित है । बहुतसी कहानियों में मानवीय मूल्यों को उभारने का प्रयास किया गया है । मध्य एवं निम्नवर्ग की विशेषताएँ, पीड़ाएँ, प्रवचंनाएँ और आर्थिक अभावों का चित्रण प्राप्त है । लेखिका ने इन दोनों वर्गों की जिंदगी के तहों को उद्‌घाटित करने का प्रयास किया है । मध्यवर्गीय कुंठाग्रस्त व्यक्ति के लिए पुराने मूल्य नष्ट हो गए हैं, वर्तमानयुगीन मूल्यसंक्रमण की स्थिति का संकेत दिया है । कृष्णा सोबती ने प्रेम, वात्सल्य, वासना, जीवन की घुटन, व्यक्ति तथा समाज के परस्पर संबंध आदि विविध भावनात्मक आयामों के आयोमों को अपने कथा साहित्य में चित्रित किया है । लेखिका ने नारी की आंतरिक उलझनों और दुविधाओं को बेहतर समझकर अंकित किया है । इनकी कहानियों के बारे में डॉ. संतबक्श सिंह लिखते हैं - ''कृष्णा सोबती ने बहुत कम कहानियाँ लिखी हैं । लेकिन जितनी लिखी हैं, वे अपना महत्व रखती हैं । पारिवारिक जीवन के यथार्थ परिवेश की अछूती गुत्थियों को कृष्णा सोबती ने सुंदर ढंग से सुलझाया है । कृष्णा सोबती ने अपनी कहानियों में नारी जीवन की परिवर्तित मन:स्थितियों एवं उसकी दमित इच्छाओं को खुले रूप में साहस के साथ अभिव्यक्त किया है ।''[12]

1.3.3 दीप्ति खंडेलवाल :-

जन्म -

दीप्ति खंडेलवाल की कहानी का क्षेत्र तो बहुत छोटा है, लेकिन इस पर कहानीकार की एक बहुत गहरी दृष्टि है । समकालीन कथाकार दीप्ति खंडेलवाल का जन्म 21 अक्टूबर, 1930 में हुआ । सन्

1970 से उन्होंने साहित्य सृजन का कार्य आरंभ किया । उनका मूल स्वर कवि का था । उसके साथ ही दीप्ति ने उपन्यास, कहानी आदि साहित्यिक विधाओं में भी लेखन किया है ।

कहानीसंग्रह :-

1. कडवे सच
2. नारी मन

दीप्ति ने मुख्य रूप से कहानियों में स्त्री-पुरुष, पति-पत्नी संबंधों को नया आयाम दिया है । इनकी कहानी में प्रेम के बनते-बिगड़ते, टुटते-सँवरते और जड़ होते स्वरूप का चित्रण निजता को लिए हुए है, जो महिला कहानीकार की विशेषता है । यह इसलिए की वह नारी के आंतरिक मन को छूने और पकड़ने की विशेष क्षमता रखती है । दीप्ति की कहानियों के बारे में सरिताकुमार लिखती हैं - ''दीप्ति खंडेलवाल की कहानियों में एक ओर नर-नारी, पति-पत्नी में बिखराव का चित्रण उपलब्ध है तो दूसरी ओर नौकरी पेशा नारियों की यातना का चित्रण मिल जाता है । इनकी कहानी रोमांटिक बोध और उससे छुटकारा पाने की यातना में डोलती रहती है ।''[13]

दीप्ति की कहानियों में दांपत्यगत दूरियाँ, अपूर्णता, रिक्तताबोध और एकाकीपन के दंश ने अनेक वैवाहिक संबंधों को किस प्रकार खोखला कर दिया है, इसका चित्रण सूक्ष्मता से किया गया है । दाम्पत्यजीवन को विघटित करनेवाले विविध तथ्यों को उद्‌घाटित किया है । उनकी कहानियों की यह भी विशेषता है, कि वह कामसंबंधों एवं सेक्स का बेझिझक स्वीकार करती हुई सेक्स को दैहिक आवश्यकता के रूप में स्वीकृती देती है ।

1.3.4 उषा प्रियंवदा :-

जन्म -

आधुनिक युग की कथालेखिकाओं में उषा प्रियंवदा का नाम अग्रणी है । उषा प्रियंवदा न केवल एक महिला उपन्यासकार के नाते ख्याति पा चुकी हैं । एक कहानीकार के नाते भी इनका नाम स्थापित हो चुका है । उषा का जन्म 24 दिसंबर, 1931 में कानपुर में हुआ ।

कहानीसंग्रह :-

1. एक कोई दूसरा
2. जिंदगी और गुलाब के फूल
3. कितना बड़ा झूठ

4. मेरी प्रिय कहानियाँ

उषा प्रियंवदा की कहानियाँ वैयक्तिक एवं समाष्टिगत दोनों प्रकार के मूल्यों को आधार बनाकर लिखी गई हैं । उनके साहित्य पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है । इस कारण आज नारी जीवन में आये परिवर्तन पुराने मूल्यों को अस्वीकार कर नए मूल्यों को आत्मसात करने की नारी की आकुलता आदि का सूक्ष्म अंकन उनकी कहानियों में हुआ है । अत: सरिताकुमार लिखती हैं - ''उषा प्रियंवदा की कहानी में नारी के अकेलेपन की समस्या और उसके प्रेम की विफलता को बार-बार उठाया गया है । वह बंधन में मुक्ति और मुक्ति में बंधन चाहती रहती है ।''[14]

आर्थिक लाभ, अविवाहित युवती का परिवार का मुखिया बनकर परवरिश करना, परंतु उसी युवती का परिवार से वितृष्णा होना, दांपत्यजीवन में मोहभंग, टूटना, असांमजस्य, भिन्न व्यक्तित्व के कारण तनाव, मनमुटाव, तीसरे के प्रति आकर्षण यौन संबंधों की खुली माँग आदि विभिन्न कोणों से लेखिका ने पारिवारिक स्थितियों का एवं समस्याओं का अंकन किया है । अत: उनका कहानीसंसार मन को गहराई से छूता है ।

उषा प्रियंवदा की कहानियाँ वैयक्तिक और समष्टिगत दोनों ही प्रकार के मूल्यों से संबंधित हैं । 'जिंदगी और गुलाब के फूल' शीर्षक संकलन की अधिकांश कहानियाँ यथार्थवादी हैं । उनमें भौतिक मूल्यों का विरोध किया गया है । अर्थमूल्य किस प्रकार भावुकता को समाप्त कर देता है, इसे इन कहानियों में देखा जा सकता है । इनकी कहानियों के बारे में डॉ. गोरधनसिंह शेखावत लिखते हैं - ''उषा जी की कहानियों में शहरी जीवन और परिवार की अनुभूतिप्रवण चित्र दिखाई पड़ते हैं । आधुनिक नगर-बोध की उदासी, अकेलेपन, ऊब आदि का अंकन उन्होंने यथार्थ बोध के साथ किया है । उनकी कहानियों में चमत्कार नहीं, पर इनकी कहानियाँ गहरा प्रभाव छोड़ती हैं ।''[15]

1.3.5 मन्नू भंडारी :-

जन्म -

समकालीन महिला कहानीकारों में मन्नू भंडारी सफल लेखिका मानी जाती हैं । मन्नू भंडारी का जन्म ३ अप्रैल, 1931 को मध्यप्रदेश में स्थित भानपुरा नामक छोटे से गाँव में हुआ ।

कहानीसंग्रह :-

1. मैं हार गई
2. मेरी प्रिय कहानियाँ
3. तीन निगाहों की तस्वीर
4. त्रिशंकू

5. यही सच है
6. एक प्लेट सैलाब
7. श्रेष्ठ कहानियाँ

मन्नू भंडारी की अधिकांश कहानियाँ पारिवारिक जीवन, पति-पत्नी के संबंधों के विभिन्न धरातल, संयुक्त एवं केंद्रिय परिवार आदि बातों को केंद्र में रखकर रची हुई है । कहानियों का प्रतिपाद्य प्रेमविवाह, तलाक, नारी की समस्या, नारी जीवन की त्रासदी, दांपत्य जीवन में तनाव, संघर्ष और घुटन को चित्रित करता है । आधुनिक नारी उनकी कहानियों के मध्य में है । मन्नू भंडारी के कहानी-कला के संदर्भ में सरिताकुमार लिखती हैं - ''मन्नू भंडारी की कहानी-कला उस संक्रांति की स्थिति का निरूपण करती है, जो पुराने महिला कहानीकारों और समकालीन महिला कथाकारों के बीच की है । इनकी कहानी में परंपरागत प्रेम से न तो पूरी तरह छुटकारा पाया गया है और न ही पूरी तरह इसे अपनाया गया है ।''[16]

मन्नू भंडारी अपनी कहानियों में स्त्री और पुरुष के आपसी संबंधों को आलोकित करती हैं और युग-बोध के अनुरूप प्रेम के बदलते हुए स्वरूप को निरुपित करती हैं ।

1.3.6 मालती जोशी :-

जन्म -

समकालीन युग की सर्वाधिक लोकप्रिय लेखिका श्रीमती मालती जोशी का कथा-साहित्य प्रशंसनीय है । आधुनिक युग में भी मालती जोशी जैसी महिला कथाकार नारी जीवन को अपना विषय बनाकर भारत की संस्कृति और परंपरा को सहज स्वाभाविक अभिव्यक्ति दे रही हैं । ऐसी लोकप्रिय कथा-लेखिका मालती जोशी का जन्म एक मराठी-भाषी मध्यमवर्गीय परिवार में 4 जून, 1934 को महाराष्ट्र के औरंगाबाद शहर में हुआ है ।

मालती जोशी की पहली कहानी - 'टूटने से जुड़ने तक' सन् 1971 में 'धर्मयुग' पत्रिका में प्रकाशित हुई । इसके बाद कहानी लेखन का सिलसिला जारी रहा जो आज तक चल रहा है ।

कहानीसंग्रह :-

1. मध्यांतर
2. पराजय
3. मन ना भार दस बी
4. बोल री कठपुतली
5. एक घर सपनों का
6. आखरी शर्त
7. मोरी रंग दी चुनरिया
8. मालती जोशी की कहानियाँ

मालती जोशी आधुनिक होकर भी भारतीय संस्कृति में आस्था रखती हैं । इस कारण इनकी प्रत्येक कहानी में नारी आदर्श की प्रतिमूर्ति है । आधुनिक युग में पति-पत्नी में आनेवाले संबंध, आर्थिक संघर्षों से जूझती नारी, नौकरीपेशा नारी, अपेक्षा भंग का दु:ख झेलकर फर्ज निभानेवाली नारी, तलाक, स्त्री का अकेलापन, बच्चों की समस्या आदि विषय सूक्ष्मता के साथ कहानियों में चित्रित हुए हैं । मालती जोशी ने अपनी कहानियों द्वारा भारतीय महिलाओं का प्रतिनिधित्व किया है ।

मालती जोशी का जीवन के प्रति दृष्टिकोण आस्थावादी है । नारी मन की तह तक उतरती लेखिका ने पारिवारिक जीवन में व्याप्त विभिन्न समस्याओं को सहजता से प्रस्तुत किया है । बदलते परिवेश में भी पारम्पारिक मूल्यों, नैतिकता, विवाह, धर्म, संस्कृति आदि के प्रति इनका लगाव गहरा है जिसके मूल में जीवन को संतुलित देखने की चाहत है । केवल आधुनिकता के प्रवाह में बहकर अपनी सांस्कृतिक विरासत को नकारना लेखिका उचित नहीं समझती ।

1.3.7 राजी सेठ :-

जन्म -

पिछले कई वर्षों में महिला लेखन के क्षेत्र में जो नाम तेजी से उभरकर आए और जिन्होंने अपने लेखन से अपनी एक सुनिश्चित पहचान और महत्त्व स्थापित किया उनमें राजी सेठ का नाम अग्रणी है । 4 अक्तूबर, 1935 में उत्तर पश्चिम सीमांत प्रदेश में राजी सेठ का जन्म हुआ ।

कहानीसंग्रह :-

सन् 1974 से राजी सेठ ने अपना लेखन कार्य शुरु किया । 1974 में राजी सेठ की प्रथम कहानी 'समांतर चलते हुए', 'प्रतीक' पत्रिका में प्रकाशित हुई । उनके अब तक निम्नलिखित कहानीसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं ।

1. अंधे मोड से आगे
2. यात्रामुक्त
3. तीसरी हथेली
4. मेरे लई-वई (पंजाबी संग्रह)

डॉ. मधु संधु लिखती हैं - ''उनकी कहानियाँ अंतचेतना के माध्यम से कथासूत्र पकड़ने और एक आइडिया जीने एवं जिए हुए को आइडिया बनाकर प्रस्तुत करने की कहानियाँ हैं ।''[17] लेखिका की कहानियाँ उन गहरे और आंतरिक संघर्षों को अपने लिए चुनती हैं जो 'मनुष्य' कहलाने के लिए महत्वपूर्ण है । व्यक्ति के अंतर्द्वंद्व का चित्रण सामाजिक और व्यक्तिगत धरातल पर हुआ है । चिंतन प्रधान होने के कारण ये कहानियाँ वर्तमान जीवन के निकट हैं और नई नैतिकता की रचना के लिए अग्रसर हैं । राजी

सेठ की अधिक तर कहानियों में सामाजिक संबंधों की टूटन, व्यक्ति के छोटे-छोटे अनुभवों और अनजान दर्द चित्रित हुआ है ।

1.3.8 ममता कालिया :-

जन्म -

'घर परिवार' के दायरे से बाहर निकलकर जीवन के विविध आयामों को स्पर्श करनेवाली कहानीसंसार का सृजन ममता कालिया ने किया है । लेखिका को सीमित दायरे में अपने लेखन को बद्ध करना पसंद नहीं है ।

ममता कालिया का जन्म 2 नवंबर, 1940 में वृंदावन में हुआ ।

कहानीसंग्रह :-

आपकी प्रथम कहानी 'यों ही मर जायेंगे', 'ज्ञानोदय' जनवरी 1964 में प्रकाशित हुई ।

1. एक अदद औरत
2. सीट नं छ:
3. छुटकारा
4. प्रतिदिन
5. उसका यौवन
6. जाँच अभी जारी है

ममता कालिया ने अपने कहानीसंसार में घर से लेकर राजनीति की विसंगतियों तक सभी विषयों को चित्रित किया है । इसी के साथ घर की चार-दीवारों में कैद नारी की मुक्ति की आकांक्षा और उसका संघर्ष लेखिका की कहानियों का प्रस्थान बिंदू है । ममता कालिया की हर कहानी में नारी की कोमल भावुक संवेदनाएँ, अनुभूतियाँ एवं भावविश्व का और शोषण के हर पहलू का गहराई से विवेचन किया है । साथ ही संयुक्त एवं केंद्रीय परिवार में विघटन की स्थितियाँ, दांपत्यजीवन के विघटन के विविध कारण, आत्मीय संबंधों में विघटन के विविध कारण परंपरागत मूल्यों का विघटन, नवीन मूल्यों की प्रतिष्ठापना आदि विविध पारिवारिक पहलुओं पर लेखिका ने प्रकाश डाला है, अत: उनकी हर कहानी हृदय को गहराई से स्पर्श करती है ।

प्रल्हाद अग्रवाल ममता कालिया के लेखन की प्रशंसा में लिखते हैं - ''ममता कालिया की स्पष्ट और निर्भीक दृष्टि उनकी बहुत बड़ी शक्ति है, उनकी कहानियों में छिपाव नहीं है । उनमें नारी का पुरुष के समानांतर स्थान बनाने का आस्थापूर्ण प्रयत्न है ।"[18]

1.3.9 मेहरुन्निसा परवेज :-

जन्म -

आधुनिक हिंदी साहित्य की लेखिकाओं में मेहरून्निसा परवेज की एक बहुचर्चित कहानीकार के रूप अलग पहचान हैं । अपने चारों ओर की स्थितियों के और जिंदगी के टुकड़ों को वे सहजता से अपनी

कहानियों में पिरोती हैं । मेहरून्निसा का जन्म 10 दिसंबर, 1944, को बेहलगाँव जिला बालाघाट में हुआ ।

कहानीसंग्रह :-

साहित्य लेखन की शुरुवात सन् 1962 में की । मेहरुन्निसा की पहली कहानी 'पाँचवी कब्र', 'नई कहानी' पत्रिका में छपी । जिसका पाँच भाषाओं में अनुवाद हुआ । उनके अब तक निम्नांकित कहानीसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं ।

1. आदम और हवा
2. टहनियों पर धूप
3. गलत पुरुष
4. फाल्गुनी
5. अंतिम चढ़ाई
6. ढहता कुतुबमीनार

मेहरुन्निसा के कहानीसाहित्य के बारे में डॉ. सरिताकुमार लिखती हैं - ''मेहरुन्निसा अपनी कहानियों में पति-पत्नी के तनाव को बार-बार आधार बनाती हैं और लगता है कि यह इनके कथा-साहित्य की मूल अनुभूति हैं । इस तरह इनकी कहानी का दायरा बहुत सीमित तो हो जाता है, लेकिन इस दायरे पर इनकी पकड़ न केवल गहरी है, सूक्ष्म भी है ।''[19]

मेहरुन्निसा परवेज की समस्त कहानियों की विशेषता यह है कि 'विषय एवं शैली' में समानता होते हुए भी हर एक कहानी का कथाबीज रोचक एवं नवीन है । अनमेल विवाह, सेक्स, प्रेम,नारी-पुरुष की पराधीनता, अंधश्रद्धा एवं रुढ़ि परंपराओं से ग्रस्त समाज, मुस्लिम समाज जीवन, गरीबी, बहुविवाह पद्धति आदि समस्याओं का उद्घाटन कहानियों के अंतर्गत हुआ है ।

मेहरुन्निसा ने आंचलिक कथानकों पर अपनी कलम चलाई है, जिसमें 'बस्तर' का जनजीवन प्रमुख है। उन्होंने नारी के मध्यवर्गीय दर्द को जिस संजीदगी के साथं पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है वह वाकई सराहनीय है ।

1.3.10 सूर्यबाला :-

जन्म -

सूर्यबाला का जन्म 22 अक्तूबर, 1944 को मिर्जापुर में हुआ । सूर्यबाला के कहानी-साहित्य का मूल स्वर करुणा और द्वंद्व है । सृजन की प्रेरणा, लाड-दुलार, निस्वार्थ प्रेम लेखिका के साहित्य के विशेष अंग हैं । उनकी कहानियाँ वक्त की चिंतनधारा से कटी नहीं यही उनकी लेखन प्रामाणिकता है ।

कहानीसंग्रह :-

सूर्यबाला के साहित्यिक जीवन पर पिता की कवि प्रवृत्ति तथा बहनों के संगीत-साहित्य-प्रेम का विशेष प्रभाव पड़ा । सूर्यबाला की प्रथम कहानी 'जीजी' अक्तूबर, 1972 में 'सारिका' पत्रिका में प्रकाशित हुई । उनके निम्न कहानीसंग्रह हैं -

1. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम
2. दिशाहीन
3. थाली भर चाँद

लेखिका की कहानियाँ मध्य एवं निम्नवर्ग की तमाम जैविक विवशताओं, निरीहतापूर्ण अभिजात जिंदगी से जो की तरह चिपके रहने को नियतिबद्ध है । आज की आपाधापी से भरे जीवन में व्यक्ति की आधारहीन जिंदगी को, उसकी संपूर्ण पीड़ा को चित्रित किया है ।

डॉ. मधु संधु का मानना है - ''जीवन के प्रत्येक पहलू को भिन्न दृष्टिकोनों से पकड़ना सूर्यबाला का ही अभिव्यक्ति कौशल है ।''[20]

साथ ही पारिवारिक जीवन के पहलूओं को, दांपत्यजीवन के सम एवं विषम संबंधों को, पुराने और नए मूल्यों की स्थितियों का, बालमनोविज्ञान, किशोर मनोविज्ञान, प्रौढ मनोविज्ञान आदि की स्थितियों का सही विश्लेषण इनकी कहानियाँ करती हैं । अत: सूर्यबाला को महिला कहानीकारों में एक अलग स्थान प्राप्त हुआ है ।

1.3.11 चित्रा मुदगल :-

जन्म -

आठवें दशक की बहुचर्चित कथाकार चित्रा मुदगल का जन्म 10 दिसंबर, 1944 मद्रास में हुआ । चित्रा मुदगल की कहानियाँ भी इसी अनुभव वृत्त के कथ्य की नई जमीन तलाशती हैं या फिर चिर-परिचित कथ्य और मानवीय संबंधों के अनदेखे पक्षों को नये कोण से उठाती हैं ।

कहानीसंग्रह :-

1. इस हमाम में
2. ग्यारह लंबी कहानियाँ
3. अपनी वापसी, आदि

आपके कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं । आपकी कहानियों की विशेषता यह है कि वे भारतीय नारी में आई नवीन चेतना का परिचय देती हैं । चित्रा मुदगल की कहानियों की स्त्रियाँ 'अबला' न रहकर 'सबला' बनकर परिस्थितियों का सामना करती हैं चुनौतियाँ स्वीकार करती हैं । कहानी के पात्र स्थितियों, संघर्षों और सामाजिक उपेक्षाओं से टकराकर चूर हो गए हैं । उनकी कहानियों में मध्यवर्ग एवं निम्नवर्ग की आशा-आकांक्षाओं का पात्रों के द्वारा वहन किया गया है । लेखिका की बहुसंख्य कहानियाँ सामान्य मनुष्य की आत्मा, उनकी संवेदनाएँ, अनुभूतियाँ इन्हें स्पर्श करके समाज के सामने उन्हें प्रस्तुत करती हैं, उनके स्वर को बुलंद करती हैं।

चित्रा के कहानियों के बारे में डॉ, बेदप्रकाश अमिताभ लिखते हैं - ''चित्रा की कहानियाँ एक ओर रिश्तों के जुड़ने-टूटने के संदर्भों से जुड़ी हैं, दूसरी ओर झोपडपट्टियों के निम्नवर्गीय जीवन का यथार्थ चित्रित है ।''[21]

1.3.12 शशिप्रभा शास्त्री :-

जन्म -

शशिप्रभा शास्त्री की शिक्षा मुख्यत: दिल्ली विश्वविद्यालय से हुई है । वहीं से आपने हिंदी और संस्कृत में एम्.ए. तथा 'हिंदी के पौराणिक नाटकों के मूल स्त्रोत' विषय पर पीएच्.डी. प्राप्त की । व्यवसाय से आप प्राध्यापिका हैं ।

कहानीसंग्रह:-

कहानी लिखना आपने विवाहोपरांत 1956 से ही प्रारंभ किया । आपकी प्रथम कहानी 'इला', 'सरिता' पत्रिका में प्रकाशित हुई । अनेक पत्रिकाओं में आपकी कहानियाँ प्रकाशित हैं ।

1. अनुत्तरित
2. धुली हुई शाम
3. दो कहानियों के बीच
4. जोड़बाकी
5. एक टुकडा शांतिरथ .

आपके कहानीसंग्रह हैं । आपकी कहानियों का मुख्य विषय सामाजिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं का विश्लेषण-चित्रण है । शशिप्रभा शास्त्री ने नारी मनोविज्ञान एवं नारी जीवन की समस्याओं का गहन अध्ययन करके जो सूक्ष्म तंतु आविष्कृत किए हैं । नवीन मूल्यान्वेषण रूढ़ियों का तिरस्कार एवं परंपराओं के नवीन संदर्भों की पुन: जाँच उसकी कहानियों का मूल स्वर है ।

शशिप्रभा शास्त्री की कहानियाँ न हिसाबी हैं न किताबी का जोड़ तोड़ संजोये कुछ सीधी-सादी ईमानदार लकीरें मात्र है । नितांत रोमांस-रोमांच विहीन ये कहानियाँ अपने इन्हीं गुणों के कारण हर एक कहानी संग्रह की अलग पहचान है । उनका फीकापन की उनका वैशिष्ट्य है और चमत्कार भी, जो देर तक पाठक को झकझोरता हैं । लेखिका की हर एक कहानी आम साधारण व्यक्ति विशेष रूप से नारी की कहानी है । संयुक्त परिवार में निहित रिश्ते-नाते, पारिवारिक समस्याओं से उत्पन्न हर एक व्यक्ति की त्रासदी, विघटित दांपत्य जीवन को तोड़ मरोड़नेवाले विविध पहलुओं का अंकन, यौनसमस्या, प्रेम की समस्या आदि का विश्लेषण बहुत ही सूक्ष्मता से कहानियों में हुआ है ।

1.3.13 सुधा अरोड़ा :-

जन्म -

सातवें दशक की प्रख्यात कथा-लेखिका सुधा अरोड़ा का जन्म 4 अक्तूबर, 1946, लाहौर में हुआ । सुधा अरोड़ा ने नारी सुलभ घेरे से बाहर निकलकर अपनी सशक्त रचनाओं द्वारा हिंदी कहानी साहित्य को योगदान दिया है ।

कहानीसंग्रह :-

1. बगैरे तराशे हुए
2. युद्धविराम
3. महानगर की मैथिली ।

''सातवें दशक की सुविख्यात और सुपरिचित कथा-लेखिका सुधा अरोड़ा ने नारी सुलभ घेरे से बाहर निकल कर अपनी सशक्त रचनाओं द्वारा हिंदी कहानीसाहित्य को समृद्ध करने में समुचित योगदान किया है ।''[22] इन शब्दों में डॉ. सुमनकुमार सुमन ने उनका गौरव किया है ।

सुधा अरोड़ा की कहानियों में आधुनिक पृष्ठभूमि पर सामाजिक चेतना की सफल अभिव्यक्ति हुई है । व्यक्ति का अकेलापन, निराशा, घुटन, प्रभावकारी ढंग से चित्रित हुआ है । सुधा अरोड़ा की कहानियों में स्पष्टत: दो वर्ग हैं एक घर-परिवार के अनुभववृत्त और दूसरा वर्ग है जिनमें लेखिका समाज के सामने चुनौती बने सवालों से जूझती है । घर परिवार की कहानियाँ अनेक विध समस्याओं से घिरी हुई घरेलू जिंदगी की कहानियाँ हैं तो दूसरे वर्ग की कहानियाँ जुलूस, तोड़फोड़, दिशाहीन आंदोलनों, किराए के आदमियों की क्रांति की असलियत को खोलने का प्रयास करती हैं ।

1.3.14 निरुपमा सेवती :-

जन्म -

निरुपमा सेवती का जन्म 30 अक्तूबर, 1943 को हुआ । वे मुक्तिबोध, अज्ञेय, चेखव, कामू के अतिरिक्त व्यवस्था के प्रहार से उपजी आर्थिक विषमताओं, सांस्कृतिक संक्रमण एवं विविध परिवेशों एवं नौकरियों के अनुभवों को कहानी लेखन के मूल में मानती हैं ।

कहानीसंग्रह :-

आपकी प्रथम कहानी 'निरावरण', 'कहानी' पत्रिका में जुलाई, 1968 में प्रकाशित हुई । उनके निम्नलिखित कहानीसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं ।

1. खामोशी को पीते हुए
2. आतंक बीज
3. काले खरगोश
4. कच्चा मकान
5. भीड़ में गुम

आपकी कहानियों में यंत्रणा, संत्रास एवं तनाव से मुक्त होने की इच्छा एवं अस्तित्व की तलाश का सार्थक प्रयास मिलता है । निरुपमा सेवती ने अपनी कहानियों में अधिकतर नौकरी पेशा अविवाहिता लड़कियों की समस्याओं और उनकी स्वतंत्रता की कामना का वर्णन किया है । स्वंतत्रता की कामना में वे सभी संबंधों को नकार देती हैं ।

इंद्रनाथ मदान के मतानुसार - ''निरुपमा सेवती की कहानी में प्रेम के सूक्ष्म स्वरूप को उजागर किया गया है । इनका कहानी-संसार, अभिजात जीवन को लिए हुए है, जिस पर पाश्चात्य संस्कृति की छाप अंकित है ।''[23]

1.3.15 कृष्णा अग्निहोत्री :-

जन्म -

कृष्णा अग्निहोत्री भारतीय संस्कृति में सिमटे आधुनिकता के स्वर और व्यक्ति-मन की छोटी-बड़ी संवेदनात्मक स्थितियों को कथानक के कलेवर में प्रस्तुत करनेवाली कहानीकार हैं । कृष्णा अग्निहोत्री का जन्म 8 अक्तूबर, 1934 को नसीराबाद राजस्थान में तिवारी परिवार में हुआ । कुछ वर्ष पश्चात ही इनका परिवार खण्डवा आकर बस गया और ठेकेदार धनवान पिता के घर में राजमहिषी का सा वैभव प्राप्त हुआ ।

कहानीसंग्रह :-

1. टीन के घेरे
2. गलियारे
3. विरासत
4. नपुंसक
5. याही बनारसी रंग बा
6. पारस
7. जिंदा आदमी
8. जै सियाराम
9. दूसरी औरत
10. पंछी पिंजरे के
11. सर्प दंश आदि ।

उपुर्यक्त कहानीसंग्रह अब तक प्रकाशित हो चुके हैं । कृष्णा अग्निहोत्री ने अपने कथा-साहित्य से पाठकों-आलोचकों को चौंकाया नहीं है, बल्कि वे स्थितियों की विरुपता को दिखाकर उन्हें सोचने-विचारने के लिए बाध्य करती हैं । उनके कथा-साहित्य के केंद्र में नारी है । यह नारी पुरुष आधिपत्य वाले समाज की एक शोषित-उत्पीड़ित इकाई है । नारी पढ़ी लिखी है या अशिक्षित, प्रौढ है या किशोरी, इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता । उसकी नियति पुरुष द्वारा उसका दमन, शोषण और उत्पीड़न है - कृष्णा अग्निहोत्री इस कटु यथार्थ को बार-बार अपने कथा-साहित्य में रेखांकित करती हैं ।

डॉ. मंजू शर्मा लिखती हैं - ''कृष्णा अग्निहोत्री ने अपनी कहानियों में आधुनिक नारी को अपनी फैशन परस्ती के लाभ में दांपत्य संबंधों को छिन्न-भिन्न करने का दोषी ठहराया है । पुरुष का पौरुष के अभिमान में नारी की भावनाओं की उपेक्षा भी दांपत्य संबंधों में मधुरता लाने में बाधा बनती दिखाई पड़ती है ।''[24]

1.3.16 माणिका मोहिनी :-

जन्म -

महिला कहानीकारों में माणिका मोहिनी एक उभरता हुआ नाम है । अपनी कहानी में नारी के उस जीवन को आधार बनती हैं, जो परंपरा और आधुनिकता में डोल रही है । इनका जन्म 20 मई, 1940 को दिल्ली में हुआ ।

कहानीसंग्रह :-

आपकी प्रथम कहानी 'चुप के दायरे में', 'ज्ञानोदय' में 1962 में प्रकाशित हुई । आपके पाँच-संग्रह प्रकाशित हैं -

1. खत्म होने के बाद
2. पारू ने कहा था

3. अभी तलाश जारी है 4. अपना-अपना सच

5. स्वप्नदंश

आपकी कहानियों में भावुकता से बचने का यत्न, संबंधों की टूटन का तटस्थ चित्रण है । यहाँ पुरुष-स्त्री संबंधों को विशेष समझदारी और गहराई से स्पर्शाया गया है । जीवन-संघर्ष, अभाव एवं बौद्धिकता उनके कथ्य का अभिन्न अंग है ।

डॉ. इंद्रनाथ मदान लिखते हैं - ''माणिका मोहिनी की कहानी में विविधता का तो अभाव है, लेकिन वह सीमित दायरे में जिस सपाट बयानी और खुलेपन से काम लेते हैं, वह इनकी कहानी की विशेषता बन जाती है ।''[25]

अन्य महिला कहानीकारों ने भी प्रेम के बदलते हुए स्वरूप को उजागर किया है, लेकिन इनकी रचनाओं में इसके रोमांटिक स्वरूप से मुक्ति पाने में इन्हें इतनी सफलता नहीं मिली है जितनी माणिका मोहिनी को मिली है ।

1.3.17 सिम्मी हर्षिता :-

जन्म -

सिम्मी हर्षिता उन महिला कहानीकारों में हैं जिनका नाम हाल ही में उभरा है । आपका जन्म 29 नवंबर, 1940 को रावलपिंडी में हुआ ।

कहानीसंग्रह :-

आपकी प्रथम कहानी 'अपने-अपने दायरे', 'संचेतना' में जून 1969 में प्रकाशित हुई । आपके निम्न दो कहानीसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं -

1. कमरे में बंद आभास
2. धराशायी

आपकी अनेक कहानियाँ प्रमुख कथा-संकलनों में संकलित हैं । कहानी लिखना आपके लिए हर बार नया और कठिन पाठ सीखना है - पानी के अंदर ही अंदर तैरकर नदी पार करने की यात्रा तय करना है । सिम्मी हर्षिता की कहानियों में अविवाहित नारी की समस्या को केंद्रीत किया गया है और प्रेम के उस स्वरूप को उजागर किया गया है जो मौन और रोमांटिक है ।

सिम्मी हर्षिता की कहानियों में परिवारों की बदलती हुई मानसिकता अपने व्यापक रूप में दृष्टिगोचर होती है । आधुनिक संबंधों के साथ-साथ पुरानी पीढ़ी के अपने समय के अनुभवों को बहुत ही खूबी से मिलाकर प्रस्तुत करने की अनोखी क्षमता भी सिम्मी हर्षिता में दिखलाई पड़ती है ।

सिम्मी हर्षिता के कहानियों के बारे में वेदप्रकाश अमिताभ लिखते हैं - ''सिम्मी हर्षिता की कहानियों में एक ओर सीमित अनुभवों की दहलीज लाँघने की कोशिश की है, दूसरी ओर पीढ़ियों के अंतराल पर लिखते समय कुछ नया कहने की ईमानदारी भी है ।''[24]

1.3.18 प्रतिमा वर्मा :-

जन्म -

प्रतिमा वर्मा का जन्म 1939 को पटना, बिहार में हुआ । पिता के घर राजनीतिक और साहित्यिक वातावरण, माता-पिता के साथ जेल-जीवन और बड़े नेताओं - गांधीजी, नेहरू जी, जयप्रकाश नारायण, विनोबा भावे तथा दिनकर जी को निकट से देखना उनके जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं । पति उत्तरप्रदेश में राजपत्रित अधिकारी हैं ।

कहानीसंग्रह :-

प्रतिमा वर्मा की प्रथम कहानी 'मच्छरदानी' 1957 में 'कहानी' पत्रिका में प्रकाशित हुई । इनके दो कहानीसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं ।

1. एक सुबह और
2. बंधे पावों का सफर

प्रतिमा वर्मा उन महिला कहानीकारों में हैं जो निम्न मध्यवर्गीय जीवन में प्रेम के स्वरूप की तलाश और उससे जूझने की समस्या को अपनी कहानियों में उजागर करती हैं ।

1.3.19 मृणाल पांडे :-

जन्म -

समकालीन महिला कथा लेखिका में मृणाल पांडे महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं । आजकल कहानी लेखन में उनका नाम चर्चित और प्रतिष्ठा प्राप्त है । नारी की स्वतंत्र अस्मिता के लिए आधुनिक सामाजिक परिवेश में जो लेखिकाएँ कलम से संघर्ष कर रही हैं, उनमें मृणाल पांडे का नाम अग्रणी है।

कहानीसाहित्य :-

1. दरम्यान 2. एक नीच ट्रेजेडी

3. शब्दवेधी 4. एक स्त्री का विदा गीत

आपकी कहानियाँ अपने अलग शिल्पप्रयोग के कारण आकर्षक लगती हैं। आपने पहाड़ी जीवन तथा महानगरीय जीवन से संबंधित कहानियाँ लिखी हैं, जिसका सूत्र है नारी जीवन की पीड़ा । यदि पहाड़ी जीवन की कहानी हो तो उनकी भाषा अपनी सहजता, पात्र की आयु वर्ग के अनुरुप प्रस्तुत होती है, तो शहरी जीवन की कहानियों में इस भाषा का धारदार व्यंग्य, अर्थ सामर्थ्य मोह लेता है ।

मृणाल पांडे ने अपनी लोक कथाओं द्वारा पुरुष नियंत्रित समाज और उसी के कारण बनाये गए नैतिक नियमों को चुनौती दी है, और यही बात उनकी अपनी अलग पहचान, विशेषता प्रकट करती है ।

मृणाल पांडे अपनी कुछ एक कहानियों में जिनमें प्रेम के बदले हुए स्वरूप को उजागर किया गया है, इतनी गहनता नहीं है जो अन्य महिला कहानीकारों की कृतियों में उपलब्ध होती है । वह केवल प्रेम की अनुभूतियों के सतही संकेत देकर अपनी कहानी की रचना करती हैं ।

• समकालीन महिला कहानीकारों में मृदुला गर्ग का स्थान -

समकालीन महिला कहानीकारों में मृदुला गर्ग का नाम महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर चुका है । नारी जीवन पर तथा नारी के यौन अनुभवों, प्रेम-विषयक आधुनिक जीवन दृष्टि को खुलेपन से चित्रित करने में मृदुला गर्ग को काफी सफलता मिली है ।

प्राचीन काल से आज तक नारी पिसती जा रही है, पहले यह शोषण शारीरिक या भावात्मक स्तर पर ही होता था, पर वर्तमान युग में अर्थतंत्र भी नारी की गर्दन पर सवार हो गया है । अब तक केवल भोग्या या बच्चे जनने की मशीन ही बनकर रह गई धी, लेकिन अब वह रूपया कमाने का यंत्र बन गई है । नारी के सामने आज अनेक समस्याएँ आ गई हैं । अत: आज के नारी लेखन में नारी-चेतना का एक सार्थक बिंब उभर रहा है । आज की हर महिला लेखिकाओं के साहित्य में नई चेतना संपन्न संघर्षशील नारी का चित्र उभर रहा है ।

आज की महिला रचनाकारों के बारे में माधुरी छेड़ा कहती हैं - ''असल में महिला रचनाकारों की रचनाओं में इतिहास-वृत्ति से संघर्ष करती हुई और नवीन जीवन पॅटर्न पर चलती हुई नारी-चेतना अभिव्यक्त हुई है ।''[27]

आधुनिक युग में समकालीन महिला कहानीकारों का एक वर्ग खूब फला-फूला है । इन्होंने पर्याप्त मात्रा में कहानी-साहित्य लिखा है । ऐसा नहीं कि इनका अधिकतर साहित्य काम संबंधों के

यथार्थ तक ही सीमित है । प्राय: इन लेखिकाओं ने महिला लेखन की रूढ़ियों को तोड़ने की कोशिश की है ।

मृदुला गर्ग की अनेक कहानियों में मुख्यत: मध्यवर्गीय यौन-प्रश्नों, कुण्ठाओं तथा नारी की मानसिकता की भिन्न स्थितियों को स्वाभाविक रूप में उठाया गया है । अत: अन्य महिला कहानीकारों में मृदुला गर्ग का विशिष्ट स्थान है ।

शिवानी ने अपने कहानी संसार में जीवन यथार्थ के रूमानी प्रेम-सौंदर्य को तथा नारी संवेदनाओं की गहराई, भावनाओं की सुकुमारता को चित्रित किया है ।

कृष्णा सोबती ने भी अपने कथासाहित्य में प्रेम के क्षेत्र में रोमांटिक बोध से आधुनिक बोध की ओर तथा आत्मीयता से शारीरिकता का वर्णन किया है ।

मन्नू भंडारी, दीप्ति खंडेलवाल, चित्रा मुदगल आदि कहानी लेखिकाओं में जो खुलापन 'साहस' हमें दिखाई देता है, वह मृदुला गर्ग की कहानियों में भी दिखाई देता है । फिर भी लेखिका की कुछ कहानियाँ 'महिला लेखन' के दायरे से बाहर चली गई हैं । निरुपमा सेवती, मेहरुन्निसा परवेज, मालती जोशी आदि लेखिकाओं की कहानियों में पारिवारिक समस्याओं का चित्रण अधिक पाया जाता है ।

राजी सेठ की अधिकतर कहानियों में सामाजिक संबंधों की टूटन, व्यक्ति के छोटे-छोटे अनुभवों और अनजान दर्द चित्रित हुआ है । लेकिन इसकी अपेक्षा मृदुला गर्ग की अधिकतर कहानियों में व्यक्तिगत दर्द को वाणी मिली है ।

सूर्यबाला की कहानियों में पारिवारिक एवं दांपत्य जीवन के पहलुओं का चित्रण किया है । चित्रा मुदगल की कहानियाँ 'अबला' न रहकर 'सबला' बनकर परिस्थितियों का सामना करती हैं । उसी तरह का चित्रण मृदुला गर्ग की कुछ कहानियों में दिखाई देता है । सुधा अरोड़ा, निरुपमा सेवती, माणिका मोहिनी, सिम्मी हर्षिता आदि नई लेखिकाओं के कहानीसंसार में नारी की अनेक समस्याओं का चित्रण किया है । आधुनिक युग में प्रेम के बदलते दृष्टिकोण को इनके कहानियों द्वारा चित्रित किया है । सिम्मी हर्षिता की कहानियों की नारी प्रेम के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखती हैं - ''प्रेम शादी के बाद ही करना चाहिए । वह प्रेम सच्चा और वास्तविक होता है ।''[28]

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि मृदुला गर्ग एक सफल उपन्यासकार तथा कहानीकार हैं । उनका साहित्य प्रमुखत: नारी जीवन पर आधारित है । नारी जीवन की समस्याओं को उन्होंने अपने साहित्य में मुखरित किया है । उनका साहित्य उनके व्यक्तित्व का अनेक मात्रा में प्रतिबिंब है । जीवन के अनुभवों को उन्होंने अपने साहित्य में चित्रित किया है । आधुनिक नारी का जीवन, उसकी सारी जटिल समस्याओं के साथ चित्रित किया है । आधुनिक नारी मन की मनोवैज्ञानिक गुत्थी सुलझाने में लेखिका सफल रही हैं ।

समग्रत: समकालीन महिला कहानीकारों में मृदुला गर्ग का स्थान अलग है । मृदुला ने नारी-मन और उसके अस्तित्व को बदलती हुई परिस्थितियों से जोड़ कर देखा और इसी कारण इनका लेखन पूर्ववर्ती लेखन से स्पष्टत: प्रस्थान करता दिखाई देता है । आज की नारी की सामाजिक नियति और मानसिकता को बड़ी गहराई से तथा मार्मिकता से उन्होंने उभारा है । मृदुला गर्ग न तो नारी को झूठ महिमान्वित करती हैं, और न उन्हें नकली रूप में पीड़ित दिखाती हैं । अपनी समूचि परिणतियों के साथ एक विशेष दायरे में आज जो नारी है, उसकी पहचान वह उभारती है ।

'कितनी कैदें' के प्रकाशन के बाद मृदुला गर्ग की कथाकार की यह छबि बन गई कि वह नारी के यौन अनुभवों, यौन और प्रेमविषयक आधुनिक जीवन-दृष्टि को अपनी रचनाओं में पूरे खुलेपन से चित्रित करती हैं । कहानीकार ने नारी का मानसिक द्वंद्व इतनी कुशलता से उभारा है कि वह निश्चित ही प्रशंसनीय है । आपने नारी मन की मनोवैज्ञानिक गुत्थी को पूर्ण उन्मुक्तता तथा स्वच्छंदता से खोलने की चेष्टा की है । अन्य समकालीन महिला कहानीकारों की अपेक्षा मृदुला गर्ग नारी मन की कुशल चितेरी के रूप में हिंदी साहित्य जगत् में ख्याति प्राप्त कर गयी हैं ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. सं. मृदुला गर्ग, रविवार पत्रिका, पृ. 54
2. वही, पृ. 68
3. मृदुला गर्ग, शहर के नाम, पृ. 13
4. मृदुला गर्ग, सारिका (मासिक), पृ. 46
5. सरिताकुमार, महिला कथाकारों की रचनाओं में प्रेम का स्वरूप-विकास पृ. 180
6. मृदुला गर्ग, वितृष्णा - उर्फ सैम, पृ. 31
7. मृदुला गर्ग, जिजीविषा - उर्फ सैम, पृ. 107
8. सं. विनोददास, वागर्थ, जुलाई, २००२, पृ. 106
9. सं. भगवत रावत, साक्षात्कार, अप्रैल, २००३, पृ. 113
10. माधुरी छेडा, हिंदुस्थानी जबान (मासिक), पृ. 10
11. डॉ. नीरज जैन, आधुनिक हिंदी उपन्यास व्यक्तित्व विघटन के निकष पर, पृ. 101
12. डॉ. संतबक्श सिंह, नई कहानी : कथ्य और शिल्प पृ. 54
13. सरिताकुमार, महिला कथाकारों की रचनाओं में प्रेम का स्वरूप-विकास, पृ. 179
14. वही, पृ. 129
15. डॉ. गोरधनसिंह शेखावत, नयी कहानी : उपलब्धि और सीमाएँ, पृ. 98
16. सरिताकुमार, महिला कथाकारों की रचनाओं में प्रेम का स्वरूप-विकास, पृ. 119
17. डॉ. मधु संधु, साठोत्तर महिला कहानीकार, पृ. 141
18. प्रल्हाद अग्रवाल, हिंदी कहानी सातवाँ दशक, पृ. 54
19. सरिताकुमार, महिला कथाकारों की रचनाओं में प्रेम का स्वरूप-विकास, पृ. 54
20. डॉ. मधु संधु, साठोत्तर महिला कहानीकार, पृ. 104
21. डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, हिंदी कहानी के सौ वर्ष, पृ. 99
22. डॉ. सुमनकुमार सुमन, कहानी और कहानीकार, पृ. 114

23. डॉ. इंद्रनाथ मदान, हिंदी कहानी एक नयी दृष्टि, पृ. 159

24. डॉ. मंजू शर्मा, साठोत्तरी महिला कहानीकार, पृ. 182

25. डॉ. इंद्रनाथ मदान, हिंदी कहानी एक नयी दृष्टि, पृ. 163

26. डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ, हिंदी कहानी के सौ वर्ष, पृ. 96

27. माधुरी छेडा, हिंदुस्थानी जबान (मासिक), पृ. 12

28. सरिताकुमार, महिला कथाकारों की रचनाओं में प्रेम का स्वरूप-विकास, पृ. 217